



SOUVENIR



WAVES

21st India Conference 2017

Practical Aspects of Vedic Knowledge

वैदिक ज्ञान के व्यावहारिक पक्ष

Abstracts of Papers

Wider Association for Vedic Studies (WAVES)

(A Multidisciplinary Academic Society, Regd. in India)

in collaboration with

Centre for Indology, Bharatiya Vidya Bhavan, N. Delhi

&

**Haryana Sarasvati Heritage Development Board,
Government of Haryana**

21st India Conference of WAVES

On

Practical Aspects of Vedic Knowledge

वैदिक ज्ञान के व्यावहारिक पक्ष

Abstracts of Papers

Edited by:

Prof. Shashi Tiwari

President, WAVES

Dr. Ranjit Behera

Secretary, WAVES

Dr. Aparna Dhir

Secretary, WAVES

10th (Sunday) to 12th (Tuesday), December 2017

Venue:

Bharatiya Vidya Bhavan,

Kasturba Gandhi Marg, New Delhi-110001

- | | |
|------------------------------|---|
| 14. सुश्री ईवाना वशिष्ठ | 34. सुश्री रिग्जिन यंगदोल |
| 15. श्री जलज कुमार | 35. डॉ. संगीता शर्मा |
| 16. सुश्री खुशबू कुमारी | 36. सुश्री सपना यादव |
| 17. सुश्री मंगला ठाकुर | 37. श्री सतीश कुमार |
| 18. श्री मनीष कुमार झा | 38. सुश्री शिप्रा सिंह |
| 19. सुश्री मानसी शर्मा | 39. सुश्री शिवांगी शर्मा |
| 20. डॉ. एम. डी. थॉमस | 40. श्री श्यामकुमार |
| 21. सुश्री मेकल सतरावल | 41. सुश्री सोनल बैरवा |
| 22. सुश्री नन्दिनी दास | 42. श्री सुबोध कुमार |
| 23. सुश्री निहारिका | 43. प्रो. सुधीर कुमार एवं श्री अनिल कुमार |
| 24. सुश्री पवित्रा अग्रवाल | 44. सुश्री सुनीता अटल |
| 25. श्री राघवेन्द्र मिश्र | 45. कु. सुरुचि शर्मा |
| 26. श्री राकेश कुमार | 46. डॉ. सुषमा चौधरी |
| 27. श्रीमती रक्षिता | 47. श्री तुषार मुखर्जी |
| 28. सुश्री राम दुलारी मीना | 48. डा. उधम सिंह |
| 29. श्री रमेश चन्द्र नैलवाल: | 49. डॉ. उर्वी अग्रवाल |
| 30. डॉ. रञ्जन लता | 50. श्री विकास शर्मा |
| 31. डॉ. रंजीत बेहेरा | 51. श्री योगेन्द्र भारद्वाज |
| 32. श्री रवि प्रकाश चौबे | |
| 33. सुश्री रेखा कुमारी | |

Svargiya Shri Rameshwer Das Gupta Memorial Award -2017

Svargiya Shri Rameshwer Das Gupta Memorial Award for year 2017 will be given to young scholars (age up to 45 years) for writing and presenting outstanding research papers in the 21st India Conference of WAVES.

Prizes will be given in the Valedictory Session of the conference.

Seven Prizes:

- **First Prize** of Rs. 3000/-
- **Second Prize** of Rs. 2000/-
(2 prizes)
- **Third Prize** of Rs. 1000/-
(2 prizes)
- **Encouragement Prize** of Rs.500/- (2 prizes)

Committee of Judges:

- **Dr. Vedwati Vaidik**- (Ex Faculty, Skt, SAC, DU)
- **Dr. Asha Rani Tripathi** (Ex Faculty, Skt, NEHU)
- **Dr. Urmila Rustagi** (Ex. Faculty, M.C., Skt., DU)
- **Dr. Dharma Sharma** (Ex Faculty ,Skt. LBC.,DU)
- **Prof. Dinesh C. Shastri** (Veda, G.K.U., Haridwar)
- **Dr. Pankaj Mishra** (Faculty, Skt., St .C., DU)
- **Dr. Anju Seth** (Faculty, Skt., S.C., DU)

वेदों में व्यावहारिक योग का स्वरूप

डॉ. ऊधम सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, योग, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

Email: udham.singh@gkv.ac.in,

डॉ. दिनेशचन्द्र शास्त्री

प्रोफेसर, वेद, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

Email: dineshcsastri@gmail.com

ऋग्वेद में योग की महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहा गया है- “यस्मादृते न सिद्ध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन। स धीनां योगमिन्वति” (ऋग्वेद 1.18.7) अर्थात् योग के बिना विद्वान किसी भी प्रकार के अच्छे से अच्छे कार्यों को सम्पन्न करने में सफल नहीं होता है। इसीलिए युञ्जते मन युञ्जते धियः (ऋग्वेद 5.81.1) मंत्र का गायन करते हुए वैदिक ऋषि मन (चित्त) को योग में लगाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। क्योंकि योगस्थ हुए बिना स्वयं, प्रकृति और परमात्मा को नहीं जाना जा सकता है। भारतीय चिंतन मनीषा सर्वांगीण विकास को आधार मानती है। योग मनुष्य के सर्वांगीण विकास का एक सहज सरल मार्ग है।

वेद शाश्वत ज्ञान के प्रतीक हैं। वेद मानवीय पुरुषार्थ से युक्त सामान्य रचना नहीं है। यह तो समाधिस्थ हुए ऋषियों का ऋचाओं से हुए साक्षात्कार का प्रतिफल है। वैदिक ऋचाओं का रहस्योद्घाटन योग की उच्च भूमि में ही होता है। अतः वेद और योग एक दूसरे से अन्योन्याश्रित हैं। वेदों में मनुष्य जीवन की उन्नति का व्यवहारिक ज्ञान सन्निहित है। वेद मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए पथ प्रशस्त करते हैं शरीर, मन, व्यवहार, आत्मा को पुष्ट करने के लिए अनेकों विधानों की रचना वेदों के मंत्रों में प्राप्त होती है। वेदों में यथा स्थान योग के व्यवहारिक ज्ञान- विज्ञान का विशद वर्णन प्राप्त होता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में वेदों में योग विद्या के व्यवहारिक स्वरूप का विवेचन किया है।

वेद में शिक्षा का स्वरूप

(अथर्ववेदीय ब्रह्मचर्य सूक्त के आधार पर)

डॉ. उर्वी अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर, श्री वेङ्कटेश्वर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

Email: urvi.agarwal25@gmail.com

वेदों में सृष्टि, परब्रह्म, हिरण्यगर्भ, मन, समान मनोभावना, धर्म आदि विभिन्न विषयों के अतिरिक्त व्यक्तिगत जीवन में पूर्णता लाने के समन्वय पर बल दिया गया है। इस समन्वय के लिए मनुष्य का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है अन्यथा शिक्षा के अभाव में जीवन अपूर्ण रह जाता है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य पशु रह जाता है जैसा कि प्रायः अनपढ़ गंवार लोगों में देखा जाता है। शिक्षा का महत्त्व अथर्ववेद के एक संपूर्ण सूक्त ब्रह्मचर्य सूक्त (11.5 अथर्व.) द्वारा प्रतिपादित किया गया है। तदनुसार समाज में ब्रह्मचारी का अत्यंत सम्मानजनक स्थान है ब्रह्मचर्य पढ़े लिखे (सभ्य) व्यक्ति को सर्वत्र सम्मान दिया जाता है। ब्रह्मचारी में देवता समान रूप से शुभेच्छु होते हैं।